यूरोपीय कंपनियों का आगमन

A पुर्तगाली

- ☞ यूरोपवासियों में सर्वप्रथम पुर्तगाली भारत आए।
- ☞ वास्कोडिगामा ने मई 1498 ई. को भारत के पश्चिमी तट पर स्थित कालीकट बंदरगाह पुहंचकर भारत एवं यूरोप के बीच एक नए समद्री मार्ग की खोज की।
- ☞ कालीकट के हिंदू राजा जमोरिन ने वास्कोडिगामा का हार्दिक स्वागत किया, जबकि कालीकट में बसे हुए अरब व्यापारियों ने उसके प्रति वैमनस्य का रवैया अपनाया।
- ☞ फ्रांसिस्कों की अल्मीडा को 1505 ई. मे भारत का प्रथम पुर्तगाली वायसराय बनाया गया।

  नोट- यूरोपीय कंपनियों के भारत आगमन का क्रम है- पुर्तगाली, डच, अंग्रेज और फ्रांसीसी।
- ☞ फ्रांसिस्कों डी अल्मीडा 'ब्लू वाटर पालिसी' या शांत जल की नीति के लिए जाना जाता है।
- ☞ अलफांसो द अल्बुकर्क 1509 ई. में पुर्तगालियों का वायसराय बनकर भारत आया।
- ☞ अल्बुकर्क को भारत में पुर्तगाली शक्ति का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- ☞ अल्बुकर्क ने 1510 ई. में बीजापुर के आदिलशाही सुल्तान से गोवा जीत लिया।
- ☞ पुर्तगालियों ने अपनी पहली व्यापारिक कोठी कोचीन में खोली।
- ☞ पुर्तगालियों के बाद डच लोग भारत आए।
- ☞ पुर्तगालियों ने भारत में प्रिंटिग प्रेस की शुरूआत की थी।

B.डच

- ☞ डच नीदरलैड या हॉलैड के निवासी थे।
- ☞ डच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना 1602 ई. में हुई थी।
- ☞ डचों द्वारा भारत में अपनी प्रथम व्यापारिक कोठी 1605 ई में मुसलीपट्टम में खोली गई।
- ☞ डचों ने पुलीकट में एक अन्य फैक्ट्री की स्थापना की और इसे अपना मुख्यालय बनाया।
- ☞ डचों ने बंगाल में प्रथम फैक्ट्री की स्थापना 1627 ई. पीपली में की थी।
- ☞ हुगली के निकट चिनसुरा के डच किले को 'गुस्तावुस फोर्ट' के नाम से जाना जाता है।
- ☞ गुस्तावुस फोर्ट की स्थापना 1653 ई. में की गई थी।
- ☞ भारत से भारतीय वस्त्र को निर्यात की वस्तु बनाने का श्रेय डचों को जाता है।
- ☞ डचों ने भारत में प्रथम बार औद्योगिक वेतन भोगी कर्मचारी रखें
- ☞ डचों का भारत में अंतिम रूप से पतन 1759 ई. में अंग्रेजो एवं डचों के मध्य हुए बेंदरा युद्ध से हुआ।

Ranjeet Yadav Sir

C. अंग्रेज

☞ इंग्लैड की महारानी एलिजाबेथ प्रथम ने 31 दिसंबर, 1600 ई. को ईस्ट इंडिया कंपनी की अधिकार-पत्र प्रदान किया।

☞ कैप्टन हॉकिन्स ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के राजदूत के रूप में 1608 ई. में जहागीर के दरबार में आया था।

☞ जहांगीर ने अंग्रेजी को सूरत में 1613 ई. में स्थायी कारखाना स्थापित करने की अनुमति दी।

☞ सर टॉमस रो जहांगीर के दरबार में 1615 ई. में आया और अंग्रेजी व्यापार के लिए कुछ सुविधाएं प्राप्त की।

☞ गोलकुंडा के सुल्तान ने 1632 ई में अंग्रेजों के लिए एक सुनहरा फरमान जारी किया जिसके अनुसार, 500 पैगोडा सालाना कर देकर अंग्रेज गोलकुडा राज्य के बंदरगाह पर स्वतंत्रतापूर्वक व्यापार कर सकते थे।

☞ अंग्रेज फ्रांसिस डे ने 1639 ई में चंद्रगिरि के राजा से मद्रास पटटे पर लिया।

☞ मद्रास में अग्रेजों ने एक किलाबंद कोठी का निर्माण किया।

☞ इस किलाबंद कोठी का नाम फोर्ट सेंट जॉर्ज पड़ा।

☞ इंग्लैड के राजा चार्ल्स द्वितीय का विवाह 1661 ई. में पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन ऑफ ब्रेगांजा के साथ हुआ।

☞ पुर्तगालियों ने चार्ल्स द्वितीय के दहेज के रूप में बंबई द्वीप प्रदान किया।

☞ चार्ल्स द्वितीय ने 1668 ई में बंबई को 10 पौड वार्षिक किराया लेकर ईस्ट इंडिया कंपनी को दे दिया।

☞ बंगाल के सूबेदार शाहशुजा ने सर्वप्रथम 1650 ई. में अंग्रेजों को व्यापारिक छूट की अनुमति दी। इस अनुमति को निशान कहते थे।

☞ शाहशुजा ने अंग्रेजो को 3000 रू वार्षिक कर के बदले में बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा में मुक्त व्यापार की अनुमति दी।

☞ कालीकाता, गोविंदपुर और सुतानाती गांव को मिलाकर ही आधुनिक कलकत्ता की नींव जॉब चार्नाक ने डाली। कालांतर में कलकत्ता में फोर्ट विलियम की नीवं पड़ी।

☞ फोर्ट विलियम का पहला प्रेसीडेंट चार्ल्स आयर था।

D. फ्रांस

☞ भारत में फ्रांसीसियों की प्रथम कोठी फ्रैको कैरो द्वारा 1668 ई. मे सूरत में स्थापित की गई।

☞ फ्रांसिस मार्टिन ने 1674 ई. में पांडिचेरी की स्थापना की।

Ranjeet Yadav Sir

कंपनी	स्थापना वर्ष
पुर्तगाली ईस्ट इंडिया कंपनी	1498
अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी	1600
डच ईस्ट इंडिया कंपनी	1602
डेनिश ईस्ट इंडिया कंपनी	1616
फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी	1664
स्वीडिश ईस्ट इंडिया कंपनी	1731

आंग्ल-फ्रांसीसी संघर्ष (कर्नाटक के युद्ध)

☞ कर्नाटक का प्रथम युद्ध (1746-1748) ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार का विस्तार मात्र था।

☞ यूरोप में ए-ला-शापेल की संधि (1748ई) से ऑस्ट्रिया के उत्ताधिकार का युद्ध समाप्त हो गया, परिणामस्वरूप कर्नाटक का प्रथम युद्ध भी समाप्त हो गया।

☞ कर्नाटक के द्वितीय युद्ध (1749-54ई) में फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले की हार हुई।

☞ डूप्ले की जगह गोडेडू को भारत का फ्रांसीसी गवर्नर बनाया गया, जिसने अंग्रेजो से पांडिचेरी की संधि (1755 ई.) कर ली।

☞ कर्नाटक का तृतीय (1758-63 ई.) और निर्णायक युद्ध वांडीवाश में हुआ।

☞ वांडीवाश के युद्ध (1760 ई.) में आयरकूट के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना ने काउंट लाली के नेतृत्व वाली फ्रांसीसी सेना को बुरी तरह पराजित किया।

☞ अंग्रेजों ने 1761 ई. में फ्रांसीसियों के क्षेत्र पांडिचेरी पर अधिकार कर लिया।

☞ तृतीय कर्नाटक युद्ध अंग्रेजों एवं फ्रांसीसियों के बीच पेरिस की संधि (1763ई.) के साथ समाप्त हो गया।

☞ पेरिस की संधि के द्वारा अंग्रेजो ने चंद्रनगर को छोड़कर पांडिचेरी तथा कुछ अन्य फ्रांसीसियों को लौटा दिया, परंतु उनकी किलांबदी नहीं हो सकती थी।

बंगाल में अंग्रेजी शक्ति का उदय

☞ भारत के प्रांतो में बंगाल अत्यंत उपजाऊ और सबसे समृद्ध था।

☞ अंग्रेजो ने बंगाल में अपनी प्रथम कोठी 1651 ई. में शाहशुजा की अनुमति से बनाई।

☞ मुर्शिद कुली खां बंगाल का स्वतंत्र शासक था।

☞ मुर्शिद कुली खां ने अपनी राजधानी ढाका से मुर्शिदाबाद स्थानांतरित कर दी।

☞ मुर्शिद कुली खां ने इजारेदारी प्रथा प्रारभ की और कृषकों को तकावी (अग्रिम कृषि कर) ऋण प्रदान किया।

Ranjeet Yadav Sir

नोट- इजारेदारी प्रथा ठेकेदारी प्रथा को कहा जाता था।

- ☞ मुर्शीद कुली खां के पश्चात उसका दामाद शुजाउद्दीन बंगाल की गद्दी पर बैठा।
- ☞ शुजाउद्दीन के पश्चात सरफराज खां बंगाल का नवाब बना।
- ☞ बिहार का सूबेदार अलीवर्दी खां 1740 ई. में गिरिया के युद्ध में सरफराज खां को मारकर बंगाल का नवाब बना।
- ☞ इसके शासनकाल में बंगाल इतना समृद्धशाली बन गया किय बंगाल को 'भारत का स्वर्ग' कहा जाने लगा।
- ☞ अलीवर्दी खां ने यूरोपियों की तुलना मधुमक्खियों से की और कहा कि 'यदि इन्हें न छेड़ा जाए तो शहद देगी और यदि छेड़ा जाए तो काट-काट कर मार डालेगी।
- ☞ अलीवर्दी खां ने अपने शासनकाल में मुगलों को कर देना बंद कर दिया।
- ☞ अलीवर्दी खां की मृत्यु के पश्चात उसका दामाद सिराजुदौला उसका उत्तराधिकारी बना।
- ☞ सिराजुदौला द्वारा 20 जून, 1756 ई की रात में 146 अंग्रेजो को एक छोटे कमरे में बंद कर दिया गया, अगले दिन सुबह मात्र 23 अंग्रेज ही जिंदा बचे। इस घटना को 'ब्लैक होल' के नाम से जाना जाता है।
- ☞ जे.जेड. हालवेल ब्लैक होल घटना का प्रत्यक्षदर्शी था।
- ☞ प्लासी का युद्ध 23 जून, 1757 ई. को अंग्रेज सेनापति रॉबर्ट क्लाइव और बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला के बीच हुआ।
- ☞ प्लासी के युद्ध में सिराजुद्दौला की सेना का सेनापति मीर जाफर था।
- ☞ प्लासी के युद्ध में मीर जाफर की धोखाधड़ी के कारण सिराजुद्दौला की हार हुई।
- ☞ प्लासी के युद्ध में मोहन लाल एवं मीर मदान के नेतृत्व में एक छोटी-सी सेना नवाब के प्रति वफादार रही। मीर मदान लड़ते हुए मारा गया।
- ☞ अंग्रेजों ने मीर जाफर को हटाकर 1760 ई. में उसके दमाद मीर कासिम को बंगाल का नवाब बनाया।
- ☞ मीर कासिम अलीवर्दी खां के बाद बंगाल का दूसरा सबसे योग्य नवाब था।
- ☞ 22 अक्टूबर, 1764 ई को बक्सर का युद्ध अंग्रेजों और मीर कासिम, अवध के नवाब शुजाउदौला तथा मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय (तीनों की संयुक्त सेना) के बीच हुआ।
- ☞ हेक्टर मुनरों के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना ने मीर कासिम की संयुक्त सेना पराजित कियां
- ☞ बक्सर के युद्ध के पश्चात ही भारत में वास्तविक यप से ब्रिटिश प्रभुसत्ता स्थापित हुई।
- ☞ बंगाल में द्वैध शासन 1765-1772 ई. तक लागू रहा।

Ranjeet Yadav Sir

☞ नोट- द्वैधशासन को 1765 ई. में लॉर्ड क्लाइव द्वारा प्रारंभ किया गया था, जबकि 1772 ई. में वॉरेन हेस्टिंग्स द्वारा समाप्त कर दिया गया था।

आंग्ल-मैसूर संबंध

☞ 1399 ई में मैसूर में वाडियार राजवंश की स्थापना हुई।

☞ हैदर अली ने अपना जीवन एक घुड़सवार के रूप में शुरू किया था।

☞ हैदर अली 1761 ई में मैसूर का शासक बना।

☞ द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध के दौरान पोर्ट नोवा के युद्ध में हैदर अली पराजित हुआ और उसकी मृत्यु हो गई।

☞ प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध (1767-1769 ई.) में हैदर अली विजयी हुआ था।

☞ हैदर अली की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र टीपू मैसूर की गद्दी पर बैठा।

☞ टीपू सुल्तान का जन्म 1750 ई. को हुआ था।

☞ मंगलौर की संधि द्वारा टीपू सुल्तान एवं अंग्रेजों ने एक-दूसरे के विजित क्षेत्र को वापस कर दिया।

☞ टीपू सुल्तान ने 1787 ई. में पादशाह की उपाधि धारण की।

☞ अपनी राजधानी श्रीरंगपट्टनम में टीपू ने स्वतंत्रता का वृक्ष लगवाया।

☞ टीपू स्वयं जैकोबिन क्लब का सदस्य बना और अपने आपको नागरिक टीपू कहने लगा।

☞ टीपू की मृत्यु चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध के दौरान श्रीरंगपट्टनम में 1799 ई. में हुई।

नोट- लॉर्ड कार्नवालिस ने श्रीरंगपट्टनम की संधि पर यह टिप्पणी की थी कि 'हमने अपने मित्रो को अधिक शक्तिशाली बनाए बिना ही अपने शत्रु को लाभदायक रूप से लंगड़ा कर दिया है'

पेशवाओं के अधीन मराठा साम्राज्य और आंग्ल-मराठा संघर्ष

☞ साहू के नेतृत्व में नवीन मराठा साम्राज्यवाद के प्रवर्तक पेशवा थे।

☞ साहू ने 1713 ई. में बालाजी विश्वनाथ को पेशवा नियुक्त किया।

☞ बालाजी विश्वनाथ को मराठा साम्राज्य का द्वितीय संस्थापक माना जाता है।

☞ पेशवा छत्रपति का प्रधानमंत्री होता था।

☞ पेशवा पद पहले पेशवा के साथ ही वंधानुगत हो गया था।

☞ बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु 1720 ई. में हुई।

☞ साहू ने 1720 में बालाजी विश्वनाथ के बड़े पुत्र बाजीराव प्रथम को पेशवा नियुक्त कर दियां

☞ बाजीराव प्रथम ने हिंदू पद पादशाही के आदर्श का प्रचार किया और इसे लोकप्रिय बनाया

☞ पालखेड़ा का युद्ध 1728 ई. में बाजीराव प्रथम एवं निजामल मुल्क के बीच हुआ।

Ranjeet Yadav Sir

- ☞ दिल्ली पर आक्रमण करने वाला महला पेशवा बाजीराव प्रथम था, जिसने 29 मार्च, 1737 को दिल्ली पर धावा बोला था।
- ☞ बाजीराव प्रथम की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र बालाजी बाजीराव पेशवा बना।
- ☞ संगोला संधि 1750 ई के पश्चात् पेशवा के हाथ में सारे अधिकार सुरक्षित हो गए।
- ☞ बालाजी बाजीराव के काल में मराठा राज्य का सर्वाधिक प्रसार हुआ।
- ☞ बालाजी बाजीराव को नाना साहब के नाम से भी जाना जाता है।
- ☞ पेशवा बालाजी बाजीराव के समय पानीपत का तृतीय युद्ध 14 जनवरी, 1761 ई. मराठों और अहमद शाह अब्दाली के मध्य हुआ।
- ☞ पानीपत के तृतीय युद्ध में मराठों की पराजय हुई।
- ☞ पानीपत के तृतीय युद्ध का नेतृत्व सदाशिवराय भाऊ ने किया था।
- ☞ माधवराव प्रथम 1761 ई में पेशवा बना
- ☞ माधवराव प्रथम ने मराठों की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः बहाल करने का प्रयास किया।
- ☞ माधवराव प्रथम की मृत्यु के पश्चात उसका छोटा भाई नारायण राय पेशवा बना।
- ☞ पेशवा नारायण राय (1772-73 ई) की हत्या उसके चाचा रघुनाथ राय द्वारा कर दी गई।
- ☞ अंग्रेजो के हस्तक्षेप से रघुनाथ राय के स्थान पर माधव राव नारायण को पेशवा बनाया गया।
- ☞ पेशवा माधवराय नारायण राव की अल्पायु के कारण मराठा राज्य की देख-रेख बारहभाई सभा नाम की 12 सदस्यों की एक परिषद करती थी।
- ☞ इस परिषद के दो महत्वपूर्ण सदस्य थे महादजी सिंधिया एवं नाना फड़नवीस।
- ☞ माधव राव नारायण के शासनकाल में प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध हुआ। था।
- ☞ अंतिम पेशवा रघुनाथ राव का पुत्र बाजीराव द्वितीय था।
- ☞ बाजीराव द्वितीय सहायक संधि स्वीकार करने वाला प्रथम मराठा सरदार था।
- ☞ 1776 ई. की पुरंदर की संधि के तहत कंपनी ने रघुनाथ राव के समर्थन को वापस ले लिया।
- ☞ 1782 ई. में प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध सालबाई की संधि के साथ खत्म हुआ।

  नोट- सालबाई की संधि 17 मई, 1782 ई. को महादजी सिंधिया के प्रयास से हुई।
- ☞ 1803-05 ई. में द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध हुआ।
- ☞ द्वितीय युद्ध में भोसले (नागपुर) ने अंग्रेजों को चुनौती दी थी।
- ☞ द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध की समाप्ति कंपनी के अस्थायी गर्वनर जनरल जॉर्ज बालों तथा होल्कर के मध्य जनवरी 1806 में राजपुर घाट की संधि द्वारा हुई।

Ranjeet Yadav Sir

- ☞ तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध 1817-1819 ई के पश्चात् पेशवा के वंशानुगत पद को समाप्त कर दिया गया।
- ☞ पेशवा बाजीराव द्वितीय अंतिम पेशवा था।

सिख एवं अंग्रेज संबंध

- ☞ सिख धर्म के संस्थापक गुरू नानक थे।
- ☞ गुरू नानक का जन्म 1469 ई. में पंजाब के तलवंडी नामक स्थान पर हुआ था।
- ☞ गुरू नानक ने संगत (धर्मशाला) और मंगत (लंगर) व्यवस्था प्रारंभ किया।
- ☞ 1539 ई. में करतारपुर में गुरू नानक की मृत्यु हुई।
- ☞ गुरू अंगद (1539-52 ई.) सिखों के दूसरे गुरू थे।
- ☞ गुरू अंगद का प्रारंभिक नाम लहना था।
- ☞ गुरू अंगद ने गुरूमुखी लिति का अविष्कार किया था।
- ☞ सिखों के तीसरे गुरू अमरदास (1552-74 ई.) में अपनी गद्दी गोइंदवाल में स्थापित की।
- ☞ मुगल बादशाह अकबर ने गुरू अमरदास से गोइंदवाल जाकर भेंट की और इनकी पुत्री बीबी भानी को कुछ जमीन दी।
- ☞ सिखों के चौथे गुरू रामदास (1574-81) हुए।
- ☞ गुरू रामदास, अकबर के समकालीन तथा अमरदास के दामाद थे।
- ☞ अकबर के गुरू रामदास को 500 बीघा जमीन प्रदान की। इसी जमीन पर इन्होंने अमृतसर नगर की स्थापना की।

नोट - गुरू नानक बाबर और हुमायूं के समकालीन थे।

- ☞ गुरू रामदास ने अपने पुत्र अर्जुन को उत्तराधिकारी नियुक्त कर गुरू का पद पैतृक बना दिया।
- ☞ सिखों के पांचवे गुरू अर्जुनदेव (1581-1606 ई.) हुए।
- ☞ गुरू अर्जुनदेव ने अमृतसर तालाब के मध्य में हरमिंदर साहब का निर्माण करवाया।
- ☞ गुरू अर्जुनदेव ने आदि ग्रंथ की रचना की थी।
- ☞ गुरू अर्जुन को राजकुमार खुसरों की सहायता करने के कारण जहांगीर ने 1606 ई. में मृत्युदंड दे दिया।
- ☞ सिखों के छठे गुरू हरगोविंद (1606-1644) हुए।
- ☞ इन्होने सिखों में सैनिक भावना पैदा की तथा स्वयं की रक्षा के लिए शस्त्र धारण करने की आज्ञा दी।

Ranjeet Yadav Sir

- ☞ गुरू हरगोविंद ने अमृतसर नगर की किलेबंदी कराई और यहां पर अकालतख्त का निर्माण करवाया
- ☞ सिखों के सातवे गुरू हरराय (1644-61 ई.) थे।
- ☞ सिखों के आठवे गुरू हरकिशन (1661-64 ई.) थे।
- ☞ सिखों के नवे गुरू तेगबहादुर (1664-1675 ई.) हुए।
- ☞ इस्लाम स्वीकार नही करने के कारण औरंगजेब ने गुरू तेगबहादुर को मरवा दिया।
- ☞ गुरू गोविंद सिंह (1675-1708) सिखों के दसवे एवं अंतिम गुरू थें।
- ☞ गुरू गोविंद सिंह ने आंनदपुर नगर की स्थापना की ओर वही पर अपनी गद्दी स्थापित की।
- ☞ गुरू गोविंद सिंह की आत्मकथा का नाम विचित्र नाटक है।
- ☞ गुरू गोविद सिंह ने 1699 ई. में वैशाखी के दिन खालसा पंथ की स्थापना की।
- ☞ गुरू गोविद सिंह ने सिख धर्म के पुरूषों को नाम के आगे सिंह शब्द जोड़ने को कहा।
- ☞ गुरू गोविंद सिंह ने पाहुल प्राणाली की शुरूआत की।
- ☞ गुरू गोविंद सिंह ने सिख अनुयायियों से पांच वस्तुए केश, कंघा, कच्छा, कृपाण और कड़ा धारण करने को कहा।
- ☞ गुरू गोविंद सिंह ने सिखों के धार्मिक ग्रंथ आदिग्रंथ को वर्तमान रूप दिया।
- ☞ गुरू गोविंद सिंह के पुत्र फतह सिंह और जोरावर सिंह को सरहिंद के मुगल फौजदार वजीर खा ने दीवार मे चिनवा दिया।
- ☞ गुरू गोविंद सिंह की हत्या 1708 ई. में दक्षिण भारत में नांदेड़ नामक स्थान पर एक पठान ने कर दी।
- ☞ बंदा बहादुर के बचपन का नाम लक्ष्मणदेव था।
- ☞ बंदा बहादुर ने प्रथम सिख राज्य की स्थापना की।
- ☞ बंदा बहादुर ने प्रथम सिख राज्य की स्थापना की।
- ☞ बंदा बहादुर ने गुरू नानक और गुरू गोविन्द सिंह के नाम के सिक्के चलवाए और सिख राज्य की मुहर बनवाई।
- ☞ बंदा बहादुर को फर्रूखसियर के शासनकाल में मृत्युदंड दे दिया गया।
- ☞ बंदा बहादुर की मृत्यु के बाद पंजाब में छोटे-छोटे सिख राज्यो की स्थापना हुई, जो मिसल कहलाते थे।
- ☞ इस समय पंजाब में 12 मिसले कार्य कर रही थी।

Ranjeet Yadav Sir

रणजीत सिंह

☞ सुकरचकिया मिसल के प्रमुख महासिंह के यहा रणजीत सिंह का जन्म नवंबर, 1780 में हुआ था।

☞ काबुल के शासक जमांशाह ने 1798 ई. में रणजीत सिंह की सेवाओं के बदले उन्हें 'राजा' की उपाधि प्रदान की थी।

☞ रणजीत सिंह 1799 ई में लाहौर के शासक बने।

☞ चार्ल्स मेटकॉफ और रणजीत सिंह के बीच 25 अप्रैल, 1809 को अमृतसर की संधि हुई।

☞ रणजीत सिंह का राज्य चार सूबों में बांटा था- पेशावर, कश्मीर मुल्तान एवं लाहौर।

☞ रणजीत सिंह के साम्राज्य की राजधानी लाहौर थी।

☞ रणजीत सिंह को कोहिनूर हीरा शाहशूजा से प्राप्त हुआ था।

☞ रणजीत सिंह की मृत्यु जून 1839 में हो गई।

☞ रणजीत सिंह का विदेश मंत्री फकीर अजीजुद्दीन था।

☞ प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध (1845-1846 ई.)

☞ द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध (1848-1849ई.)

☞ लाहौर की संधि (9 मार्च, 1846) के साथ ही प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध समाप्त हुआ।

☞ मार्च, 1849 को डलहौजी ने सिख राज्य को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया।

☞ महाराजा दिलीप सिंह को 40 हजार पौंड वार्षिक पेंशन दे दी गई और उसे शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैण्ड भेज दिया गया।

☞ महाराजा दिलीप सिंह से कोहिनूर हीरा लेकर महारानी विक्टोरिया को भेज दिया गया।

नोट- भगत जवाहर मल के शिष्य राम सिंह ने 1872 ई. में अग्रेजों का डटकर सामान किया, बाद में इन्हें कैद कर रंगून भेज दिया गया। 1885 में इनकी मृत्यु हो गई।

नोट- बंकिम चंद्र चटर्जी का आंनदमठ का कथानक संन्यासी विद्रोह पर आधारित है।

नोट- इस विद्रोह को वॉरेन हेस्टिंग्स ने दबाया।

Ranjeet Yadav Sir